श्री महावीराय नमः जैनं जयति शासनम्

श्रीमत् सुदर्शन गुरवे नमः

जैन संस्कार शिविर
पाठ्यक्रम भाग-1

जैन संस्कार शिविर समिति

A step for the Jain youth of tomorrow

संस्करण : 2020

प्रकाशकीय

शासनपति भगवान् महावीर स्वामी ने सम्यग्ज्ञान, सम्यग् दर्शन, सम्यक् चारित्र एवं सम्यक् तप, इन चारों को मोक्ष का द्वार फरमाया है। इनमें चारित्र एवं तप शरीर-साध्य होने से इह भविक हैं अर्थात् केवल धारण-कर्त्ता तक सीमित रहते हैं, अन्य व्यक्ति में या परभव में स्थानान्तरित नहीं हो सकते। सम्यग् दर्शन भी आत्मा का ही निश्चयगुण होने से इसका लेन-देन असम्भव है। केवल सम्यग् ज्ञान ही दूसरे को दिया/लिया/पहुंचाया जा सकता है। स्कूल/कालेजों का ज्ञान छात्र-छात्राओं को आजीविका कमाने के लिए सक्षम बनाने पर केन्द्रित रहता है, पर धर्म-शिक्षा का ज्ञान उन्हें सुसंस्कारी व व्यसन-मुक्त बनाकर इस भव व परभव में कल्याण-साधक बनता है।

आज भारतवर्ष में विभिन्न प्रान्तों में, विभन्न संगठनों द्वारा, विभिन्न शैली में अनेक धर्म-शिक्षण-शिविर लगाए जा रहे हैं। पूज्य गुरुदेव संघ-शास्ता शासन-प्रभावक श्री सुदर्शन लाल जी म. सा. के मुनि-संघ के महामुनिराज महास्थविर श्री प्रकाश चन्द्र जी म. एवं संघ संचालक मनोहर व्याख्यानी श्री नरेश मुनि जी म. तथा इनके संघवर्ती अन्य विद्वान मुनिराजों एवं महासतियों के कृपापूर्ण आशीर्वाद से जैन संस्कार शिविर समिति, दिल्ली द्वारा सन् 2012 से उत्तर भारत के कई प्रान्तों में स्थानीय जैन सभाओं के सहयोग से जैन-संस्कार-शिविर लगाए जा रहे हैं। इन शिविरों में नई पीढ़ी को जैन धर्म, जैन धर्म-स्थान व जैन धर्म गुरुओं से जोड़ने का सम्प्रदाय-निरपेक्ष रूप में भगीरथ प्रयास किया जा रहा है।

इस पुस्तक के निर्माण में पूज्य गुरुदेवों एवं विभन्न लेखकों की रचनाओं का विनम्र सहयोग लिया गया है। हम उन सब के हृदय से आभारी हैं।

इस पुस्तक को प्रत्येक जैन सुक्ष्मता से पढ़े, समझे और उस पर आचरण करे। हमें आशा है कि यह पुस्तक बालकों तथा युवाओं को जैन धर्म के संस्कार देने में सफल रहेगी।

इस ही मंगल मनीषा के साथ...

रवीन्द्र जैन
शिविर-संयोजक

प्रकाशक :
जय जिनशासन प्रकाशन
212, वीर अपार्टमैन्टस्, सैक्टर 13,
रोहिणी, दिल्ली-110 085
Mob: +91-98102 87446
Email : jaijinshaasanprakaashan@gmail.com

मुद्रक :
सिस्टम्स् विज़न, नई दिल्ली
Mob: +91-98102 12565
Email: systemsvision96@gmail.com

श्री मया-मदन-सुदर्शन-प्रकाश-पद्म-नरेश गुरुभ्योः नमः

विषयक्रम

क्रमांक	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
	सूत्र विभाग	
1.	नवकार मंत्र अर्थ सहित	2
2.	गुरु वन्दन सूत्र अर्थ सहित	5
	तत्व विभाग	
1.	जैन धर्म	7
2.	धर्म और पाप	8
3.	तीर्थ और तीर्थंकर	9
4.	सोलह सतियों के नाम	10
5.	20 विहरमानों के नाम	10
6.	जैन साधु-साध्वी सम्प्रदाय	11
7.	स्थानकवासी मुनियों के नियम	12
8.	गति चार	13
9.	इन्द्रियाँ पाँच	15
10.	जाति पाँच	16
11.	सामायिक	17
	काव्य विभाग	
12.	प्रार्थना	19
13.	एक पहाड़ा	20
14.	Numers Poem	20
15.	हाय हैलो छोड़िए जय जिनेन्द्र बोलिए	21
16.	छोटे-छोटे बच्चे	21
	सामान्य ज्ञान विभाग व कथा विभाग	
17.	भगवान महावीर स्वामी	22
18.	जैन ध्वज	24
19.	जैन प्रतीक	25
20.	जैन बालक के कर्तव्य	26
21.	पाठ्यक्रम सम्बंधित मुख्य प्रश्नोत्तर	28
22.	Glossary	31

नवकार मंत्र

नमो अरिहंताणं
नमो सिद्धाणं
नमो आयरियाणं
नमो उवज्झायणं
नमो लोए सव्व साहूणं
एसो पंच नमोक्कारो, सव्व-पावप्पणासणो।
मगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं ॥

यह मंत्र जैन धर्म का मूल मंत्र है और इसमें पाँच बड़ी महान आत्माओं को नमस्कार किया गया है, और उनको किया हुआ नमस्कार हमारे लिए सब पापों का नाशक व मंगलकारी है।

अर्थः

नमो अरिहताणं	अरिहन्तों को नमस्कार हो। (Bow Down to Conquerors of Attachment & Hate)
नमो सिद्धाणं	सिद्धों (Liberated Souls) को नमस्कार हो।
नमो आयरियाणं	आचार्यों (Preceptors) को नमस्कार हो।
नमो उवज्झायणं	उपाध्यायों (Teachers of Knowledge) को नमस्कार हो।
नमो लोए सव्व-साहूणं	लोक (Universe) में सब साधुओं (Sages) को नमस्कार हो।
एसो पंच नमोक्कारो	यह पाचों को किया हुआ नमस्कार।
सव्व-पावप्पणासणो	सब पापों (All Sins) का नाश करने वाला है।
मगंलाणं च सव्वेसिं	सभी मंगलों (Auspicious) में
पढ़मं हवइ मंगलं	प्रथम (First) मंगल है।

प्रश्न-उत्तर

प्र. 1. मंत्र किसे कहते हैं?

उ. शब्दों का ऐसा समूह (Group) जिनकी संख्या कम हो और भाव (Expression of Thoughts) अधिक हों और जिसको चितारने (Chant) से मन शान्त हो, उसे मंत्र (Mantra) कहते हैं।

प्र. 2. अरिहंत किसे कहते हैं?

उ. a. जिन आत्माओं के 4 कर्म। [ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय (Deluding)] अन्तराय (Obstructing)] समाप्त हो गए हैं, ऐसी आत्माओं को हम अरिहंत या अरिहंत भगवान कहते हैं। OR

उ. b. जिन आत्माओं ने राग और द्वेष (Attachment & Hate) पर विजय (Conquor) पा ली है, उन्हें हम अरिहंत कहते हैं।

प्र. 3. सिद्ध किसे कहते हैं?

जिन आत्माओं के 8 कर्म समाप्त हो गए हैं, उन्हें हम सिद्ध या सिद्ध भगवान कहते हैं। प्रथम 4 कर्म तो अरिहंत भगवान वाले और शेष 4 कर्मों के नाम इस प्रकार हैं:–

1. वेदनीय कर्म (Pertaining to Feelings);
2. नाम कर्म (Body Physique Determing);
3. गोत्र कर्म (Status);
4. आयुष्य कर्म (Life Span).

प्र. 4. अरिहंत और सिद्ध भगवान में अन्य क्या अंतर (differences) होते हैं।

उ.

	अरिहंत	सिद्ध
1.	चार कर्म नष्ठ हुए हैं	आठ कर्म नष्ठ हो गए हैं
2.	शरीर धारी हैं	अशरीरी, मोक्ष में विराजमान हैं
3.	हमें दिखाई देते हैं	हमें दिखाई नहीं देते
4.	धर्म का उपदेश देते हैं	उपदेश नहीं देते हैं।

प्र. 5. आचार्य किसे कहते हैं?

उ. ऐसे मुनिराज जो स्वयं आचार (Code of Conduct) का पालन (Follow) करते हैं और अपने अधीन अन्य साधु-सतियों, श्रावक-श्राविकाओं से पालन करवाते हैं। (He is like a Principal of a School)

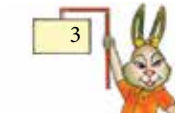

प्र. 6. उपाध्याय किसे कहते हैं?

उत्तरः ऐसे मुनिराज जो बहुत अधिक ज्ञानी हैं और दूसरों को भी ज्ञान देते हैं, उन्हें हम उपाध्याय कहते हैं। (He is like a Senior Teacher of a School or Professor of a College)

प्र. 7. साधु किसे कहते हैं?

उत्तरः जो व्यक्ति 5 महाव्रतों (Five Vows) का पालन (Follow) करता है उसे साधु कहते हैं। जैन दर्शन के अनुसार 5 महाव्रत इस प्रकार से हैं:

साधु-साध्वी के 5 महाव्रत

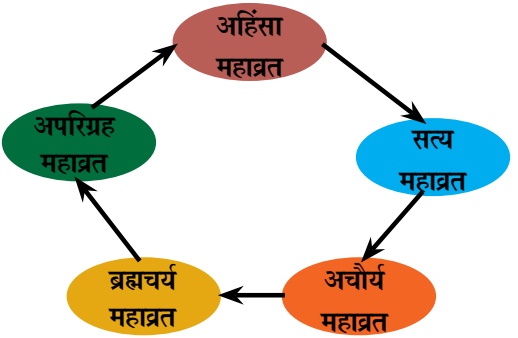

1. अहिंसा महाव्रत (Vow not to kill any Living Being)
2. सत्य महाव्रत (Vow not to lie in any Circumstances)
3. अचौर्य महाव्रत (Vow not to steal Any Thing)
4. ब्रह्मचर्य महाव्रत (Vow to be Chaste for the Whole Life)
5. अपरिग्रह महाव्रत (Vow to Renounce Property etc.)

आचार्य, उपाध्याय भी साधु के नियमों का तो पालन करते ही हैं। साधु के ये 5 महाव्रत मूल गुण भी कहलाते हैं। इन व्रतों का पालन प्रत्येक साधु-साध्वी के लिए Compulsory है। इन गुणों के अलावा हर साधु-साध्वी में अपने-2 कुछ अलग गुण हो सकते हैं, जिन्हें हम उत्तर गुण कहते हैं और साधु-साध्वी अपने सामर्थ्य के अनुसार उनका पालन करते हैं।

गुरु-वन्दन सूत्र

तिक्खुतो आयाहिणं पयाहिणं करेमि।
वन्दामि नमंसामि सक्कारेमि, सम्माणेमि ॥
कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं।
पज्जुवासामि मत्थएण वंदामि ॥

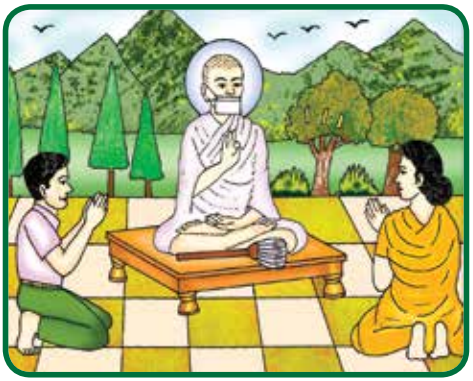

जैसे हम स्कूल में अपने Teachers को Good Morning or Good Afternoon बोलकर उनके प्रति Respect दिखाते हैं, उसी प्रकार हम अपने धर्म गुरुओं के प्रति 'गुरु वन्दन सूत्र' पढ़कर तीन बार विधि सहित वन्दना-नमस्कार करते हैं।

अर्थः

तिक्खुतो	तीन बार (Three Times)
आयाहिणं पयाहिणं	दाहिनी ओर से प्रदक्षिणा
करेमि	करता हूँ (I do)
वन्दामि, नंमसामि, सक्कारेमि, सम्माणेमि	(स्तुति, नमस्कार, सत्कार, सम्मान) (Bow down, Kneel Down, Honour, Pay Respect)
कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं	कल्याण रूप, मंगल रूप, धर्मदेव, ज्ञान स्वरूप (Blisses, Auspicious, Divine, Knowledge in Carnate)

पज्जुवासामि	उपासना करता हूँ (I Worship)
मत्थएण	मस्तक झुकाकर
वंदामि	वंदना करता हूँ (Bow Down)

प्र. नमस्कार किसे कहते हैं?

उ. स्वयं को छोटा तथा बड़ों को बड़ा समझते हुए, उसके सूचक स्वयं की काया को धरती की ओर झुकाना नमस्कार है।

प्र. सत्कार और सम्मान में क्या अतंर है?

उ. सत्कार में स्वयं की Body को झुकाना है और सम्मान में अपने मन के भावों को झुकाना है।

प्र. गुरु वंदना की विधि क्या है?

उ. गुरुओं के समीप आकर दोनों हाथों को Fold करके Clockwise Direction में घुमाते हुए तीन बार 'गुरु-वन्दना सूत्र' पढ़ते हुए अपने 5 अगों (2 हाथ, 2 पैर, 1 मस्तक) को जमीन पर टिकाकर नमस्कार करना।

प्र. गुरुओं को तीन बार वंदना क्यों की जाती है?

उ. गुरुओं के पास सम्यक ज्ञान, सम्यक दर्शन व सम्यक चारित्र (Right Knowledge, Right Perception & Right Character) नामक 3 गुण (Quality Gem) होते हैं। वे गुण हम में भी आ जाएं अतः इन्हीं भावों से हर एक गुण के लिए एक वन्दना की जाती है।

प्र. उपासना किसे कहते हैं?

उ. गुरुओं के निकट बैठना उपासना कहलाती है। गुरुओं के पास बैठते समय हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि हमारी वजह से उनको असुविधा न हो और उनसे धर्मचर्चा के अलावा व्यर्थ की बातें न करें। (i.e. We should sit near to our Guruji in such a way that they don't feel inconvenience and should not discuss Worldly Things except Dharma).

प्र. कल्याण और मंगल किसे कहते हैं?

उ. मोक्ष को प्राप्त कराने वाले को कल्याण कहते हैं और पाप रूपी विघ्न को दूर करने वाले को मंगल कहते हैं।

जैन धर्म

प्र. 1. धर्म क्या है?

सबसे पहले हमें यह जानना होगा कि धर्म क्या होता है। धर्म की अनेक परिभाषाएँ हैं। किसी भी वस्तु के स्वभाव (Nature) को धर्म कहते हैं। जैसे पानी का स्वभाव शीतलता (Coldness) है, अग्नि का स्वभाव गर्मी है। इसी प्रकार हमें अपनी आत्मा के स्वभाव को जानना है, और आत्मा का स्वभाव है अन्नत ज्ञान (Infinite Knowledge), अन्नत दर्शन (Infinite Perception)।

2. धर्म की दूसरी परिभाषा हम इस प्रकार से कह सकते हैं कि यह एक दर्शन (Philosophy) है, और दुनिया में बहुत सारे दर्शन हैं, जैसे हिन्दु, सिख, यहुदी, बौद्ध, मुसलमान व जैन आदि और यह Philosophy हमें जीवन जीने की राह सिखाती है।

प्र. 2. जैन धर्म क्या है?

उ. जैन धर्म भी एक दर्शन (Philosophy) है, जिसका आचरण (Follow) करके हम अपनी आत्मा (Soul) के स्वभाव (Infinite Knowledge, Infinite Perception) को उजागर कर सकते हैं और उसमें रमण कर सकते हैं। और इसे ही हमने जैन धर्म कहा है।

वर्तमान समय में यह जैन दर्शन (धर्म) हमें भगवान ऋषभदेव से आरम्भ करते हुए भ. महावीर स्वामी ने हमें प्रदान किया है।

भगवान महावीर ने जैन धर्म के 3 सिद्धान्त (Principle) बताए हैं।

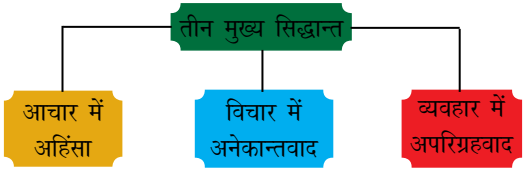

(1) आचार में अहिंसा (Following Non-Violence) (2) विचार में अनेकान्तवाद (Manysidedness in Thoughts) (3) व्यवहार में अपरिग्रहवाद (Practising Non Possessiveness)

प्र. 3. जैन शब्द की उत्पत्ति कैसे हुई?

उ. जैन शब्द 'जिन' से बना है, यानि जो जिन को मानता हो वह जैन है। अब प्रश्न उठता है कि 'जिन' किसे कहते हैं? 'जिन' उसे कहते हैं, जिसने अपनी आत्मा के राग और द्वेष (Attachment & Hate) नामक बुराइयों (Evils) को जीत (Conqueor) लिया है। उन्हें हम अरिहंत भी कहते हैं।

धर्म और पाप

पिछले पाठों में हमने जाना कि धर्म किसे कहते हैं और जैन धर्म किसे कहते हैं। आज हम निम्नलिखित कुछ क्रियाओं (Actions) को जानेगें, जिनका पालन करना धर्म या धार्मिक क्रिया कहलाता है और उनके विपरीत (Opposite) चलना पाप या पाप क्रिया कहलाता है।

1. छोटे-बड़े सभी जीवों (Living Beings) की रक्षा करना
2. दुःखी जीवों पर दया करना (Show Kindness on All)
3. सत्य बोलना (Speaking True)
4. चोरी नही करना (Not to Steel)
5. मांस, अण्डा, शराब, Drugs, हुक्का आदि का सेवन नहीं करना
6. अपनी वस्तुओं में सन्तोष रखना
7. किसी भी साथी व अन्य से ईर्ष्या (Jeleous) नहीं करना
8. बड़ों की विनय (Respect) करना

तीर्थ और तीर्थंकर

प्र. तीर्थंकर किसे कहते हैं?

उ. तीर्थ की स्थापना करने वाले को 'तीर्थंकर' कहते हैं। जैन धर्म के अनुसार हम उन्हें अरिहंत या जिनेश्वर भगवान भी कहते हैं।

प्र. तीर्थ किसे कहते हैं?

उ. तीर्थ दो प्रकार के होते हैं। पहले हैं पवित्र स्थल जैसे बदरीनाथ, केदारनाथ, मानसरोवर आदि ये सब द्रव्य तीर्थ हैं।

दूसरे तीर्थ आध्यात्मिक हैं, ये 4 हैं– साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविका। इसे हम 'चतुर्विध संघ' भी कहते हैं।

प्र. जैन धर्म के अनुसार तीर्थंकर कितने हैं?

उ. वर्तमान काल के अनुसार 24 तीर्थंकर हैं और उनके नाम इस प्रकार हैं।

24 तीर्थंकर भगवानों के नाम

1. ऋषभदेव जी
2. अजितनाथ जी
3. संभवनाथ जी
4. अभिनन्दन जी
5. सुमति नाथ जी
6. पद्मप्रभ जी
7. सुपार्श्वनाथ जी
8. चंद्रप्रभ जी
9. सुविधिनाथ जी
10. शीतलनाथ जी
11. श्रेयांसनाथ जी
12. वासुपूज्य जी
13. विमलनाथ जी
14. अनन्तनाथ जी
15. धर्मनाथ जी
16. शान्तिनाथ जी
17. कुन्थुनाथ जी
18. अरनाथ जी
19. मल्लिनाथ जी
20. मुनिसुव्रत जी
21. नमिनाथ जी
22. अरिष्टनेमि जी
23. पार्श्वनाथ जी
24. महावीर स्वामी जी

सोलह सतियाँ

1.	ब्राह्मी	2.	सुन्दरी	3.	चन्दनाबाला
4.	राजीमति	5.	द्रोपदी	6.	कौशल्या
7.	मृगावती	8.	सुलसा	9.	सीता
10.	दमयंती	11.	शिवादेवी	12.	कुंती
13.	सुभद्रा	14.	पुष्पचूला	15.	प्रभावती
16.	पद्मावती				

20 विहरमान

1. श्री सीमंधर स्वामी जी
2. श्री युगमंदर स्वामी जी
3. श्री बाहु स्वामी जी
4. श्री सुबाहु स्वामी जी
5. श्री सुजात स्वामी जी
6. श्री स्वयंप्रभ स्वामी जी
7. श्री ऋषभानन स्वामी जी
8. श्री अनन्तवीर्य स्वामी जी
9. श्री सूरप्रभ स्वामी जी
10. श्री विशालधर स्वामी जी
11. श्री व्रजधर स्वामी जी
12. श्री चन्द्रानन स्वामी जी
13. श्री भद्रबाहु स्वामी जी
14. श्री भुजंगम स्वामी जी
15. श्री ईश्वर स्वामी जी
16. श्री नेमिप्रभ स्वामी जी
17. श्री वीरसेन स्वामी जी
18. श्री महाभद्र स्वामी जी
19. श्री देवयश स्वामी जी
20. श्री अजितवीर्य स्वामी जी

ये 20 तीर्थंकर अभी महाविदेह क्षेत्र में विचर रहे हैं इसलिए इनको 'विहरमान' कहते हैं।

जैन साधु-साध्वी सम्प्रदाय

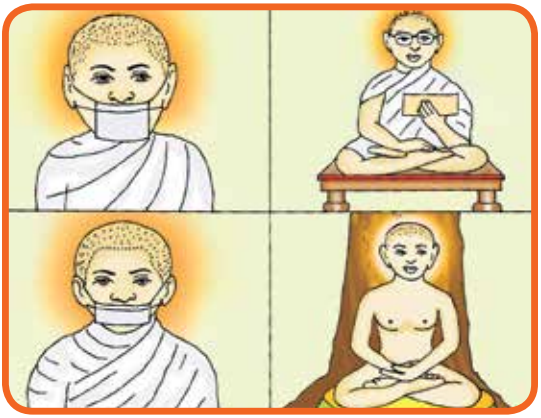

भ. महावीर ने उपदेश देकर धर्म संघ की स्थापना की। उस समय समाज व साधु वर्ग में जैन साधना पद्धति **(Way of Doing Dharm)** को लेकर कोई विशेष अन्तर नहीं था। भ. महावीर स्वामी के समय में साधु वर्ग सचेलक और अचेलक कहलाते थे। जो साधु वस्त्र धारण करते थे वे सचेलक और जो साधु वस्त्र धारण नहीं करते थे, वे अचेलक।

परन्तु धीरे-2 यह अन्तर (Difference) बढ़ता गया और आज के समय में जैन धर्म के अनुयायी श्रावकों व साधु-साध्वियों ने अपने आप को 4 भागों में विभाजित कर लिया है। अपितु मूलरूप से सिद्धान्तों में कोई अन्तर नहीं है, फिर भी बाह्य (External) रूप में कुछ-2 Difference नजर आता है।

चार वर्गों के नाम इस प्रकर से हैं:–

1. श्वेताम्बर स्थानाकवासी सम्प्रदाय
2. श्वेताम्बर तेरापन्थी सम्प्रदाय
3. श्वेताम्बर मन्दिर मार्गी सम्प्रदाय
4. दिगम्बर सम्प्रदाय

2016 की गणना के अनुसार चारों सम्प्रदायों के साधु-साध्वियों की संख्या क्रमशः 4002, 720, 9667 9619 है।

स्थानकवासी मुनियों के नियम

जैसा कि पहले बताया जा चुका है कि कोई भी व्यक्ति जब जैन साधु या साध्वी बनता है तो पाँच महाव्रतों को ग्रहण करता है और उन्हें सम्पूर्ण जीवन निभाता है। यह 5 महाव्रतों का नियम चारों सम्प्रदाय के साधुओं (साध्वियों) पर लागू होता है और इन्हीं 5 महाव्रतों में जैन साधु की **आचार सहिंता (Code of Conduct)** आ जाती है। फिर भी इन महाव्रतों के पालन हेतु कुछ **उपनियम (Sub Rules) [समाचारी]**, चारों सम्प्रदायों के अपने-अपने हैं। अतः निम्न लिखित नियम स्थानकवासी साधु-साध्वियों के पालन हेतु बताए जा रहे हैं।

1. मुख पर श्वेत मुखवस्त्रिका लगाते हैं, श्वेत वस्त्र धारण करते हैं और हाथ में रजोहरण रखते हैं।
2. नंगे पैर पैदल चलते हैं और दिन के समय ही चलते हैं।
3. गृहस्थों के घर से 42 दोष टालकर भोजन लेते हैं।
4. रात्री (During Sunset to Sunrise) में किसी भी प्रकार का आहार (Food), पानी (Water, Liquid) व दवाई (Medicine) आदि भी नहीं लेते हैं।
5. वर्ष में 1 या 2 बार सिर के बालों का हाथ से लोच करते हैं।
6. साधु स्त्री को व साध्वी पुरुष को स्पर्श नहीं करती (i.e. a Male Saint can't Touch any Female and a Female Saint can't Touch any Male irrespective of her or his Age)
7. भोजन हेतु लकड़ी के पात्रों का प्रयोग करते हैं।
8. T.V., Radio, Video, Mobile व Computer का प्रयोग नहीं करते हैं।
9. अपने पास किसी भी प्रकार की सम्पति (like: cash money, gold, silver, bank balance or any property) नहीं रखते हैं।

गति चार

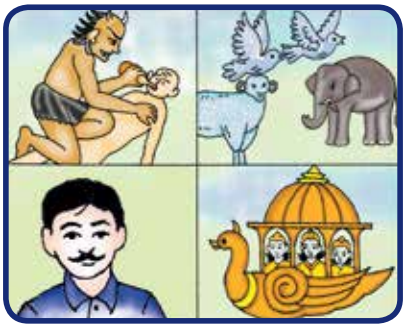

सबसे पहले हमें जानना होगा कि संसार में जितनी भी वस्तुएं हैं वो दो तरह की है (1) जीव (Living Being) और (2) अजीव (Non Living)

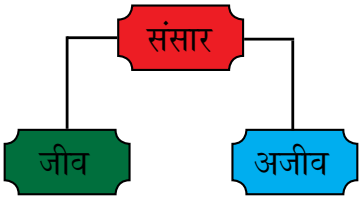

प्र. जीव (Living Being) किसे कहते हैं?

उ. जीव वह होता है, जिसमें Life होती है, जिसमें जानने की, सुख दुःख अनुभव करने की शक्ति हो, उसे जीव कहते हैं।

प्र. जीवों के मुख्य रूप से 2 प्रकार कौन से हैं?

हम पूरे ब्रह्मांड (Universe) में जीवों को 2 Category में बांट सकते हैं और पहले हैं शरीर धारी जीव Like मनुष्य, पशु, पक्षी आदि और 2nd category के जीव अशरीरी होते हैं जो कि सिद्ध कहलाते हैं और हम उन्हें देख नहीं सकते हैं।

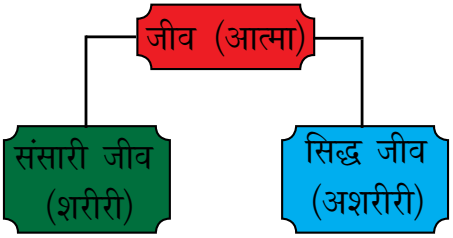

शरीरी जीव ही बार-2 जन्म मरण (Birth-Death-Birth) करते रहते हैं।

अब हमने शरीरी जीवों को वे जहां-जहां भी जन्म-मरण करते हैं, उनके आधार पर 4 Category में बांट दिया है।

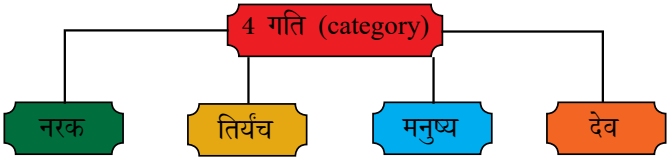

जैसे हम जब किसी पार्क में झूले झूलते हैं और उसमें कभी नीचे, कभी बीच में कभी ऊपर जाते रहते हैं, उसी प्रकार हम जैसे जीव इन 4 गतियों में चक्कर काटते रहते हैं। यानि कभी हम मनुष्य बनते हैं, कभी मनुष्य से नरक, तिर्यंच या देव बनते रहते हैं, जब तक हम अशरीरी जीव नहीं बन जाते हैं। अब हम इन 4 गतियों के बारे में जानेगें।

1. नरक गतिः यह स्थान जैन धर्म के Universe Map के अनुसार अधो भाग (Lower Part of Universe) में है यहां पर जन्म लेने वाले जीव नरक गति के जीव कहलाते हैं। उन्हें हम नारकी भी कहते हैं। नारकी जीव भी 7 Category के होते हैं, यानि पहले नरक से लेकर 7वीं नरक तक के जीव। हम उन्हें देख नहीं सकते हैं।

2. तिर्यंच गतिः यह स्थान लोक के मध्य भाग (Middle Part of the Universe) में स्थित है। पशु, पक्षी, कीट, जानवर, पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु तथा वनस्पति आदि के जीव त्रिर्यंच गति के जीव कहलाते हैं।

3. मनुष्य गतिः यह स्थान भी लोक के मध्य भाग (Middle Part of the Universe) में ही है। हम सब मानव (Human Being) मनुष्य गति के जीव कहलाते हैं।

4. देव गतिः यह स्थान लोक के ऊर्ध्वभाग (Upper Part of Universe) में है। इस गति में जन्म लेने वाले जीव देव या देवता कहलाते हैं। इन की 26 Categories हैं। यानि जीव पहले देवलोक से लेकर 26वें देवलोक तक जन्म ले सकता है।

इन्द्रियाँ पाँच

[Five Senses]

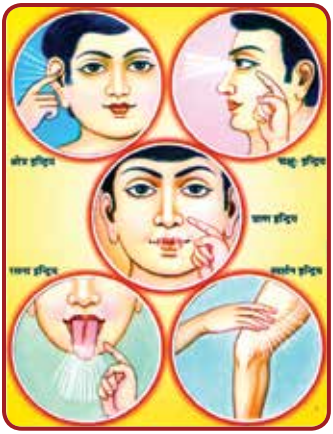

जिन साधनों या अगों के द्वारा हमारी आत्मा कुछ ज्ञान प्राप्त करती है उन्हें हम इन्द्रियाँ कहते हैं। (Through which Organs, Our Soul get some Knowledge are called Senses)

1. **स्पर्शन इन्द्रिय** (Touch Sense): इस से जीव को पदार्थो के शीत (Cold), उष्ण (Hot), हल्का (Light), भारी (Heavy) आदि स्पर्शों का ज्ञान होता है। इसे त्वचा (Skin) भी कहते हैं। इसमें हमारे शरीर के सभी अंग हाथ पैर आदि आ जाते हैं।

2. **रसना इन्द्रिय** (Tounge Sense): इस से जीव को खट्टे-मीठे, कड़वा चरचरा आदि रसों का ज्ञान होता है। इसे जिह्वा भी कहते हैं।

3. **घ्राण इन्द्रिय** (Nose Sense): इस से जीव को अच्छी या बुरी गंध का ज्ञान होता है। इसे नाक भी कहते हैं।

4. **चक्षु इन्द्रिय** (Eyes Sense): इस से जीव को काले, नीले, पीले आदि रंगों का ज्ञान होता है। आँखों से हम देखते हैं, पढ़ते हैं।

5. **श्रोत्र इन्द्रिय** (Ears Sense): इसे कान भी कहते हैं। इससे शब्दों का ज्ञान होता है। हम कान से सुनते हैं। हमें किसी की निंदा नहीं सुननी चाहिए। हमें अच्छी बातें सुननी चाहिए।

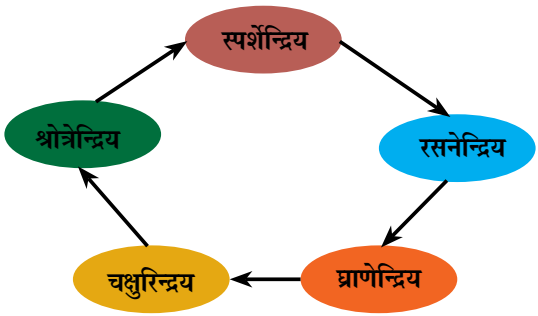

जाति पाँच
[Five Categories of Jiv]

इस लोक के जीवों के इन्द्रियों के अनुसार वर्गीकरण को जाति कहते हैं।

हमने पहले आपको बताया है कि यह आत्मा 5 इन्द्रियों (Skin, Tounge, Nose, Eyes, Ears) के द्वारा ज्ञान प्राप्त करती है और जब तक यह मुक्त (Liberated) नहीं होती, कोई-न कोई शरीर धारण करती है और शरीर धारण करते समय यह आत्मा कभी एक इन्द्रिय (Sense) वाला शरीर ग्रहण करती है, कभी दो, कभी तीन, कभी चार और कभी पाँच इन्द्रिय शरीर धारण करती है। अतः हमनें ऐसे जीवों के समूह (Group) जिनके सिर्फ एक (Sense) है, उसे एकेन्द्रिय जीव कह दिया है और 5 इन्द्रिय वाले जीव को पंचेन्द्रिय जीव कहा है। उदाहरणतः

एकेन्द्रिय (Skin) जीव: पानी, अग्नि, वनस्पति, पृथ्वी, वायु आदि

बेइन्द्रिय (Skin & Tongue) जीव: लट, केंचुआ आदि

तेइन्द्रिय (Skin, Tongue, Nose) जीव: चींटी, खटमल आदि

चउन्द्रिय (Skin, Tongue, Nose, Eyes) जीव: मक्खी, मच्छर आदि

पंचेन्द्रिय (skin, tongue, nose, eyes, ears): मनुष्य, पशु, पक्षी, देवता

सामायिक

हमने प्रथम पाठ नवकार मंत्र में जाना कि अरिहंत कौन होते हैं और सिद्ध कौन होते हैं। हमने जाना कि 8 कर्मों के कारण हमारे शरीर और आत्मा का सम्बन्ध बना रहता है। और जब तक ये 8 कर्म आत्मा के साथ रहेगें तब तक हम जन्म मरण के दुःख भोगते रहेंगे। अगर हमें हमेशा-2 के लिए सुखी होना है तो हमें इन 8 कर्मों से छुटकारा पाना होगा। वैसे तो बहुत-सारे माध्यम (Medium) हो सकते हैं इन कर्मों से छुटकारा पाने के, परन्तु फिर भी हमारे जैन गुरुओं ने हमें एक क्रिया (विधि) बताई है, जिसे अपना कर हम 8 कर्मों से छुटकारा पा सकते हैं और उस क्रिया का नाम है– **सामायिक** यानि समभाव में रहना। अब हम जानगें कि सामायिक कैसे की जाती है।

सामायिक का अर्थ होता है कि समता धारण करना, यानि इस प्रकार का अभ्यास (Exercise) करें कि हमें किसी भी वस्तु या जीव पर न राग (Attachment) रहे और न ही घृणा (Hate)। सामायिक में हम एक स्थान पर 48 मिनट के लिए आसन, मुँहपति, पूंजनी आदि लेकर एवं चोलपट्टा आदि पहनकर स्थानक या घर में एकान्त स्थान पर बैठ जाते हैं। सामायिक करते समय, पैंट, पाजामा, Shirt इत्यादि सभी कपड़े उतारकर, सफेद दुपट्टा आदि लेना चाहिए।

हमें सामायिक 32 दोष टालकर करनी चाहिए। 32 दोषों का वर्णन हम अगली पुस्तक में करेंगे। सामायिक में हमें अपनी गल्तियों को भी निहारना चाहिए। हमें सामायिक में अपने शास्त्रों (आगमों) को भी पढ़ने का अभ्यास करना चाहिए।

सामायिक विधि सहित करने के लिए सामायिक के 9 सूत्रों को याद करके उनके उच्चारण सहित (मन ही मन में) करनी चाहिए। यहां पर हम सिर्फ सामायिक के पाठों के नाम दे रहे हैं। सम्पूर्ण रूप से आप किसी भी आनुपूर्वी की पुस्तक या

संस्कार शिविर की तीनों भागों की पुस्तकों से जान सकते हैं।

सामायिक के पाठों के नाम इस प्रकार हैं।

(1) नवकार-सूत्र, (2) गुरु-वन्दन-सूत्र (3) सम्यक्त्व-सूत्र (4) आलोचना-सूत्र (5) कायोत्सर्ग-प्रतिज्ञा-सूत्र (6) चतुर्विंशति-स्तव-सूत्र (7) प्रणिपात-सूत्र (या शक्रस्तव-सूत्र) (8) सामायिक लेने का पाठ (9) सामायिक पारने का पाठ।

प्र. सामायिक के उपकरण कौन-कौन से हैं?

उ. (1) आसन, (2) मुँहपत्ति, (3) पूंजनी, (4) रजोहरण, (5) माला, (6) पुस्तक, (7) ठवणी, (8) खेस, (9) चोलपट्टा।

इन सब के अतिरिक्त आनुपूर्वी व धार्मिक पुस्तकों का उपयोग करना चाहिए।

प्र. सामायिक करने से क्या लाभ हैं?

उ. (1) समभाव की प्राप्ति होती है। (2) अट्ठारह पाप छूटते हैं। (3) दो घड़ी साधु जैसा जीवन बीतता है। (4) जीवों की दया और रक्षा की भावना बढ़ती है और दृढ़ बनती है। (5) सामायिक करने से जिनवाणी सुनने, पढ़ने और समझने का अवसर मिलता है।

प्रार्थना

हम जैन धर्म अनुयायी हैं, सर्वत्र शांति फैलाएंगे।
प्रभु महावीर के सेवक हैं, बन महावीर दिखलाएंगे ॥ टेक ॥

1. हिंसा से दूर रहेंगे हम, शत्रु को मित्र कहेंगे हम।
   सारे ही कष्ट सहेंगे हम, जग-गुलशन को महकाएंगे ॥
2. है सत्य-शील हमको प्यारा, संयम-जीवन अपना नारा।
   हम बहा त्याग-तप की धारा, जीवन आदर्श बनाएंगे ॥
3. आहार शुद्ध हम रखेंगे, आचार शुद्ध हम रखेंगे।
   व्यवहार शुद्ध हम रखेंगे और आत्मा-शुद्धि कर पाएंगे ॥
4. असहाय हैं और निर्धन हैं, जिनके भूखे नंगे तन हैं।
   जो दुखी और पीड़ित जन हैं, हम उनको गले लगाएंगे ॥

एक पहाड़ा
(A Table)

1.	पहले न. पर है एक	:	फैशन पर लागाओ ब्रेक (Brake)
2.	दूजे न. पर है दो	:	T.V. में मत ध्यान धरो
3.	तीजे न. पर है तीन	:	देखो नहीं गन्दे सीन (Scene)
4.	चौथे न. पर है चार	:	सादा जीवन, उच्च विचार
5.	पाँचवे न. पर है पाँच	:	सत्य धर्म पर न हो आँच (Harm)
6.	छटे न पर है छः	:	मेहनती की होती जय
7.	सातवें नं. पर है सात	:	सदा बड़ों की मानो बात
8.	आठवें न. पर है आठ	:	शाकाहार का पढ़ना पाठ
9.	नौवे न. पर है नौ	:	नहीं किसी से बुरे बनो
10.	दसवे न. पर है दस	:	जीवन में है पाना यश (Praise)

Numers Poem

1	2	3	4	तुम सब करो एक दूजे से प्यार
5	6	7	8	सदा याद रखो सच्चाई का पाठ
9	10	11	12	थूकं दो अपना गुस्सा सारा
13	14	15	16	सफल करो मानव चोला
17	18	19	20	मत करो एक दूजे से रीस
21	22	23	24	जैन धर्म के तीर्थंकर चौबीस

हाय हैलो छोड़िए जय जिनेन्द्र बोलिए

1. सुब उठें मम्मी से बोलें, जय जिनेन्द्र - जय जिनेन्द्र
2. अपने पापा जी से बोलें, जय जिनेन्द्र - जय जिनेन्द्र
3. दादा और दादी से बोलें, जय जिनेन्द्र - जय जिनेन्द्र
4. भैया से, दीदी से बोलें, जय जिनेन्द्र - जय जिनेन्द्र
5. स्कूल में सर मैडम से बोलें, जय जिनेन्द्र - जय जिनेन्द्र
6. सभी साथियों से हम बोलें, जय जिनेन्द्र - जय जिनेन्द्र

छोटे-छोटे बच्चे

छोटे-छोटे बच्चे, मानो गुलाब के फूल।
हम खिलते जायेंगे, महावीर के शासन में ॥टेक॥

हम बनेंगे महावीर, हम बनेंगे गौतम।
जंबू जैसे बन जायेंगे, महावीर के शासन में... ॥१॥

चंदनबाला बनेंगे, मृगावती बनेंगे।
सीता जैसे बन जायेंगे, महावीर के शासन में... ॥२॥

झूठ नहीं बोलेंगे, चोरी नहीं करेंगे।
टी.वी. से दूर रहेंगे, महावीर के शासन में... ॥३॥

सुबह जल्दी उठेंगे, नवकार मंत्र जपेंगे।
जय जिनेन्द्र बोलेंगे, महावीर के शासन में... ॥४॥

हँसते-रमते रहेंगे, गुस्सा नहीं करेंगे।
संत, सेवा साधेंगे, महावीर के शासन में... ॥५॥

जब बड़े बन जायेंगे, शासन को चमकायेंगे।
जल्दी मुक्ति पायेंगे, महावीर के शासन में... ॥६॥

भगवान महावीर स्वामी

भगवान महावीर स्वामी, जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर थे। उनका जन्म **599 (B.C.)** वर्ष पूर्व बिहार में 'क्षत्रिय कुंडग्राम' में मार्च के महीने (चैत्र शुदी त्रयोदशी) को हुआ। उनके माता-पिता का नाम रानी त्रिशला व राजा सिद्धार्थ था। उनके जन्म के बाद राजा सिद्धार्थ के राज्य में धन-धान्य (Wealth) की वृद्धि (Increment) होने से माता-पिता ने वर्धमान नाम रख दिया। आगे चलकर उनका नाम महावीर व ज्ञात पुत्र भी पड़ा।

महावीर बचपन से ही बड़े निर्भीक (Brave) थे। एक बार बच्चों के साथ खेलते हुए बीच में साँप (Snake) आ गया तो उन्होंने उसे हाथ से उठाकर एक तरफ फेंक दिया।

उन्हें जन्म से ही **तीन ज्ञान (मति ज्ञान, श्रुत ज्ञान, व अवधि ज्ञान)** थे।

महावीर आरम्भ से ही वैरागी थे, परन्तु माता-पिता की इच्छानुसार उन्होंने क्षत्रिय कन्या 'यशोदा' से शादी करवा ली और उन्हें एक पुत्री पैदा हुई जिसका नाम प्रियदर्शना रखा गया। **28 वर्ष की आयु** में महावीर के माता-पिता का देहान्त हो गया और **30 वर्ष की आयु** में बड़े भाई नन्दी वर्धन की आज्ञा से दीक्षा ग्रहण कर ली।

श्रमण महावीर को साधना काल में अनेक कष्ट आए। जैसे एक बार एक ग्वाले ने उन्हें रस्सियों से मारा। एक बार चंड कौशिक सर्प ने उन्हें डंक मारा। संगम देने ने अनेक कष्ट दिए आदि-2।

श्रमण महावीर ने **12½ वर्ष** की साधना करने के पश्चात **केवल ज्ञान (Complete Knowledge)** को प्राप्त कर लिया और इस प्रकार से अपने 4 घाती कर्मों को खपाकर अरिहंत भगवान बन गए।

क्योंकि 'अरिहंत बनने के बाद उन्होंने लोगों को उपदेश देकर साधुव्रतों व श्रावक व्रतों के नियम करवाकर तीर्थ की स्थापना की अतः वे तीर्थंकर भी कहलाए।

भ. महावीर के साधना काल के कुल **4515 दिनों में 4166 दिन** उनकी तपस्या के हैं। उनकी तपस्या हमेशा निर्जल होती थी। पूरे साधना काल में सिर्फ 2 घड़ी (48 Minutes) उन्होंने नींद ली। शेष समय प्रायः मौन और ध्यान में रहते थे। भ. महावीर स्वामी **72 वर्ष** की आयु में पावापुरी में अमावस्या के दिन निवार्ण (Liberation) को प्राप्त हो गए।

जैन ध्वज

जैसा कि आप जानते हैं कि सभी देशों का अपना-अपना ध्वज (Flag) होता है उसी प्रकार हर धर्म का अपना-2 Flag है। जैन धर्म के Flag को सन् 1974 में दिल्ली में भ. महावीर के 2500वें निर्वाण वर्ष पर निश्चित स्वरूप में स्वीकार किया गया। इसमें नवकार मंत्र के 5 पदों के आधार पर 5 रंग हैं और इनकी अपनी-2 Significance है।

	रंग	पद	प्रतीक (Significance)
1.	लाल	सिद्धों के लिए	कार्य की सम्पूर्णता का
2.	पीला	आचार्यों के लिए	धर्मसंघ की समृद्धि का
3.	सफेद	अरिहंतों के लिए	चारित्र की उज्जवलता का
4.	हरा	उपाध्यायों के लिए	ज्ञान की सम्पन्नता का
5.	काला या नीला	साधुओं के लिए	संसार से निर्लेपता का

जैन प्रतीक

किसी विशेष प्रकार के चिन्ह या पहचान की निशानी को प्रतीक कहते हैं। जैसे आपने देखा होगा कि बहुत सारी कम्पनियों के, स्कूलों के, कालिज के अपने-2 चिन्ह Logos होते हैं। आप की Shirts पर आपके School का Logo होता है, उसी प्रकार जैन धर्म का भी अपना एक Fixed Logo है। जिसे सन् 1974 में दिल्ली में Final किया गया था।

जैन धर्म के Logo की जो Shape है, वह वास्तव में जैन दर्शन की मान्यता के अनुसार संसार का नक्शा (Map) है। इसकी Height 14 रज्जू और चौड़ाई 7 रज्जू है [रज्जू मापने की एक इकाई है, It is a Measurement Unit as per Jainism].

इसे तीन भागों में बाँटा गया है। It has been divided in Three Parts which are called: अधोलोक (Lower Part of Universe), मध्यलोक (Middle Part of Universe) और उर्ध्वलोक (Upper Part of Universe):

1. Upper Part में देवता रहते हैं
2. Middle Part में हम मनुष्य व तिर्यंच (पशु, पक्षी) आदि रहते हैं
3. Lower Part में नरक के जीव रहते हैं।

जैन बालक के कर्तव्य

1. **नमस्कार करनाः** प्रतिदिन सुबह-2 उठकर माता-पिता को नमस्कार करना (जय जिनेन्द्र करना), इस दुनिया में हमारे उपर सबसे बड़ा उपकार हमारे माता-पिता का है, उन्होंने दुःख पाकर भी हमारा लालन-पालन किया है और हमें खुश रखा है।
2. **सेवा भावः** माता-पिता को कभी भी नहीं भूलें, न ही उनके सामने उल्टे बोलें और बिमारी में उनकी मन लगाकर सेवा करो, क्योंकि माता-पिता व बड़ों की सेवा करना बहुत बड़ी धर्म क्रिया है।
3. **इन्द्रियों का संयमः** अपनी जीभ व आखों पर Control रखना जैसेः—

(a) भोजन सीमित मात्रा में खाना, शाकाहारी भोजन का ही सेवन करना और जीभ के लोलुप नहीं बनना।

(b) अपनी वाणी से किसी को भी कड़वा (Soar) नहीं बोलना, इससे सामने वाले को दुःख होता है।

(c) अपनी आखों से बुरी चीजें नहीं पढ़नी चाहिए और न ही देखनी चाहिये, जैसे अश्लील पुस्तकें, अश्लील Films आदि।

(d) हमें अपने से विपरीत (Opposite Sex) को बुरी नज़रों से नहीं देखना चाहिये और Bad Touch से बचना चाहिए।

4. सिगरेट, गुटका, शराब, आदि का सेवन नहीं करना।
5. दूसरों की सहायता करना।
6. हर रोज नवकार मंत्र, सामायिक आदि करने का प्रयास करना।

7. School College आदि में कहीं भी नकल नहीं करना।
8. कभी भी चोरी नहीं करनी, झूठ नहीं बोलना।
9. अण्डे से बनी केक पेस्ट्री, आइस्क्रीम इत्यादि कुछ भी वस्तु नहीं खानी।
10. पशु, कुत्ते, बिल्ली, पक्षी आदि को बिना कारण पत्थर व डण्डा आदि नहीं मारना।
11. मधुमक्खी आदि के छत्ते में आग नहीं लगाना।
12. भोजन व पानी झूठा नहीं छोड़ना।
13. मुंह से गाली नहीं देना।
14. गुरुओं के सम्मुख बैठकर मुंह पर रुमाल या मुख वस्त्रिका लगाकर बोलना।
15. Junk food जैस बर्गर, नूडल, पिज्जा, चाउमीन, चिप्स, कुरकुरे आदि खाने से बचना। ये स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं।
16. अपने-अपने धर्म स्थान जैसे स्थानक या मन्दिर आदि में हर रोज एक बार जरूर जाना।
17. घर से बाहर जाते समय हमेशा अपने माता-पिता को बताकर जाना और कहां जा रहे हो, यह भी बताना।
18. अच्छे दोस्त बनाना और बुरे दोस्तों से दूर रहना।
19. घर के बाहर या सड़क आदि पर कूड़ा-कचरा नहीं फेंकना।
20. होली, दिवाली आदि पर पटाखे नहीं छोड़ना (इससे वायु प्रदुषण फैलता है)।
21. अधिक से अधिक पढ़ने की आदत बनाना।
22. साधु-साध्वी को आहार बहराने की भावना रखना।

पाठ्यक्रम सम्बंधित मुख्य प्रश्नोत्तर

	प्रश्न	उत्तर
1	हम किस धर्म के अनुयायी हैं?	जैन धर्म
2	शत्रु को हम क्या समझें?	मित्र
3	मन्त्र किसे कहते हैं?	शब्दों का ऐसा समुह जिसमें शब्द थोड़े हो और भाव अधिक हों
4	जैन धर्म का मुख्य मंत्र क्या है?	नवकार मंत्र / पंच परमेष्ठी
5	जिन किसे कहते है?	ऐसे महापुरूष जिन्होने अपनी आत्मा के राग और द्वेष को जीत लिया है।
6	जैन धर्म क्या है?	जो "जिन" में विश्वास रखता है।
7	जैन धर्म की स्थापना किसने की?	भ. ऋषभदेव ने
8	जैन धर्म के 24वें तींर्थकर कौन थे?	भ. महावीर स्वामी
9	भ. महावीर के प्रथम शिष्य का क्या नाम था?	इन्द्रभूति गौतम
10	तींर्थकर किसे कहते हैं?	जो तीर्थ की स्थापना करे।
11	जैन धर्म में तीर्थ क्या है?	साधु, साध्वी, श्रावक, व श्राविका का धर्म
12	भ. महावीर का जन्म कहां और कब हुआ था?	बिहार में इसा से 599 वर्ष पूर्व (चैतसुदी त्रयोदसी)
13	भ. महावीर के माता-पिता का क्या नाम था?	रानी त्रिशला / राजा सिद्धार्थ
14	भ. महावीर के अन्य क्या नाम हैं?	वर्धमान, ज्ञातपुत्र
15	भ. महावीर को दीक्षा लेने के बाद कितने दिन में केवल ज्ञान हुआ?	4515 दिन
16	केवल ज्ञान क्या होता है?	भूत, वर्तमान, भविष्य की सभी चीजों को जान लेना
17	भ. महावीर का निर्वाण कितनी आयु में हुआ?	72 वर्ष
18	गुरूओं को किस पाठ से वन्दना करते हैं?	तिक्खुतो के पाठ से
19	जैन धर्म के झंण्डे में कितने रंग हैं?	पाँच
20	जैन प्रतीक के मध्य भाग में कौन रहते हैं?	मनुष्य और तिर्यंच
21	गति कितनी हैं?	4 (नरक, तिर्यंच, मनुष्य, देव)

पाठ्यक्रम सम्बंधित मुख्य प्रश्नोत्तर

	प्रश्न	उत्तर
22	इन्द्रिय किसे कहते है?	जीव आत्मा के ज्ञान के साधन-भूत अंगों को
23	इन्द्रियाँ कितनी है?	पाँच (स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु, श्रोत्र)
24	सामायिक किसे कहते हैं?	सभी पापों का त्याग करके आत्मा में समता धारण करना (सावध योगों का त्याग)
25	एक सामायिक कितने समय की होती है?	48 मिनट
26	जैन बालक की 5 पहचान लिखो।	हर रोज नवकार मंत्र का जाप करता है। माता पिता को प्रणाम करता है। कुव्यसनों का त्याग रखता है। सिगरेट, गुटखा, तम्बाकु आदि नही खाता है। कभी भी गाली या अपशब्द का प्रयोग नहीं करता
27	जैन धर्म का मुख्य नारा क्या है?	जिओ और जीने दो (Live & Let Live)
28	हमारे गुरू कौन हैं?	पाँच महाव्रतधारी जैन साधु/साध्वी
29	हमें आपस में क्या बोलना चाहिये?	जय जिनेन्द्र!
30	जैन धर्म आस्तिक है या नास्तिक?	आस्तिक
31	मैं हूँ (यह 'मैं', आत्मा है या शरीर?)	आत्मा
32	आत्मा और शरीर एक हैं या अलग-अलग?	अलग-अलग
33	क्या आत्मा कभी मरती है?	नहीं
34	क्या शरीर मरता है?	हां
35	क्या हमारे शरीर में आत्मा है?	हां
36	क्या आत्मा को देखा जा सकता है?	नहीं
37	इस शरीर में आत्मा किस कारण से मौजूद है?	कर्मो की वजह से

पाठ्यक्रम सम्बंधित मुख्य प्रश्नोत्तर

	प्रश्न	उत्तर
38	क्या कर्मों को आत्मा से अलग किया जा सकता है?	हाँ
39	अरिहन्त किसे कहते हैं?	राग द्वेष को जीतने वाले, शरीरधारी परमात्मा
40	सिद्ध किसे कहते हैं?	8 कर्मो से मुक्त आत्मा को
41	भ. महावीर ने साधना काल में किस सर्प का उद्धार किया?	चण्ड-कौषिक सर्प
42	जैन धर्म के कितने भाग हैं?	चार–श्वेताम्बर स्थानकवासी, तेरापंथी, मूर्तिपूजक, दिगम्बर
43	पेड़, पानी को कौन सी इन्द्रियां होती हैं?	स्पर्श
44	लट, केचुआ को कौन सी इन्द्रियां होती हैं?	स्पर्श और रसना
45	चीटीं, खटमल को कौन सी इन्द्रियां होती हैं?	स्पर्श, रसना और घ्राण
46	मक्खी, मच्छर को कौन सी इन्द्रियां होती हैं?	स्पर्श, रसना, घ्राण और चक्षु
47	मनुष्य, हाथी, देव, नारकी को कौन सी इन्द्रियां होती हैं?	स्पर्श, रसना, घ्राण, चक्षु और श्रोत्र
48	सामयिक करने में कितने पाठ पढ़े जाते हैं?	9
49	जैन धर्म के 3 प्रमुख सिद्धांतों में प्रथम सिद्धान्त कौन सा है?	अहिंसा
50	तीर्थंकर के कितने गुण होते हैं?	बारह
51	कुल ज्ञान कितने होते हैं?	पाँच
52	तींर्थकरो को जन्म से कितने ज्ञान होते हैं?	तीन (मति, श्रुत, अवधि)
53	तींर्थकरों को दीक्षा ग्रहण करने पर कौन सा ज्ञान हो जाता है?	मनः पर्यव
54	चन्दन बाला का किसने उद्धार किया?	भ. महावीर ने
55	साधू/साध्वी चार्तुमास के अतिरिक्त एक स्थान पर अधिकतम कितने दिन ठहर सकते हैं?	29/58 दिन
56	स्थावर जीव कितने प्रकार के होते हैं?	5
57	वायुकाय जीव स्थावर है या त्रस	स्थावर

Glossary

1	अचित्त	Non-Living
2	अचौर्य	Non-Stealing
3	अचौर्य महाव्रत	Non-Stealing Vow
4	अजीव	Non-Living Matter
5	अणुव्रत	Limited Vow
6	अधोलोक	Lower Part of Universe
7	अन्तराय	Obstructing
8	अनेकान्तवाद	Many Sidedness
9	अपकाय	Water Beings
10	अपरिग्रह	Non-Possession
11	अपरिग्रह महाव्रत	Non-Possession Vow
12	अल्पसंख्यक	Minority
13	अवधिज्ञान	Limited Knowledge
14	अहिंसा	Non-Violence
15	अहिंसा महाव्रत	Non-Violence Vow
16	आत्मा	Soul
17	आस्तिक	Theist
18	आश्रव	Influx of Karmas
19	इन्द्रियां	Senses
20	ईष्ट	Desired
21	ऊर्ध्वलोक	Upper Part of Universe
22	कषाय	Passions
23	केवल दर्शन	Complete Vision
24	केवल ज्ञान	Complete Knowledge
25	क्रोध	Anger
26	घनघाती	Destructive
27	घ्राण इन्द्रिय	Nose Sense
28	चक्षु इन्द्रिय	Eye Sense
29	चेतना	Soul
30	जिन	Conqueror
31	जीव	Living Beings, Soul
32	तत्व	Fundamentals
33	तिर्यंच	Animal Beings
34	तेऊकाय	Fire Beings
35	दर्शनावरणीय	Perception Obscuring
36	द्वेष	Hate
37	नारकी	Infernal Beings
38	नास्तिक	Atheistic
39	निर्जरा	Eradication of Karmas
40	पुण्य	Results of Good deed
41	पृथ्वीकाय	Earth Beings
42	बन्ध	Bondage of Karmas
43	ब्रह्मचर्य	Celebacy
44	ब्रह्मचर्य महाव्रत	Chaste Vow
45	मध्यलोक	Middle Part of Universe
46	मान	Pride
47	माया	Deceit
48	मुक्तजीव	Liberated Beings
49	मोहनीय	Deluding
50	मोक्ष	Liberation
51	रसना इन्द्रिय	Tounge Sense

52	राग	Attachment
53	लोभ	Greed
54	वनस्पतिकाय	Plant Beings
55	वायुकाय	Air Beings
56	वीतराग	Omnipresent
57	सचित	Living
58	सत्य	Truthness
59	सत्य महाव्रत	Truthness Vow
60	संवर	Stoppage of Karmas
61	संसारी	Worldly

62	सम्यक चारित्र	Right Character
63	सम्यक दर्शन	Right Vision
64	सम्यक ज्ञान	Right Knowledge
65	सर्वज्ञ, सर्वदर्शी	Omnipresent
66	सिद्धांत	Principle
67	स्पर्शन इन्द्रिय	Skin Sense
68	क्षय	Destroy
69	त्रसकाय	Moving Beings
70	ज्ञानावरणीय	Knowledge Obscuring
71	श्रोत्र इन्द्रिय	Ear Sense

भाग-1

जैन संस्कार शिविर समिति, दिल्ली के मुख्य उद्देश्य

1. जैन धर्मानुसार जीवन शैली अपनाकर आनन्द-युक्त जीवन (blissful life) बनाना
2. जैन धर्म के समृद्ध इतिहास, संस्कृति, दर्शन और साधना पद्धति को अत्यन्त सरल व आधुनिक तकनीक से सिखाना
3. सम्प्रदाय-निर्पेक्ष धर्म की सही जानकारी देना
4. परिवार, समाज व राष्ट्र के प्रति वफादार और जागरुक नागरिक तैयार करना
5. स्वाध्याय-शील बनने की प्रेरणा देना
6. भय मुक्त धार्मिक क्रियाओं की तरफ प्रेरित करना